International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-01-2022, Accepted: 15-01-2022, Published: 31-01-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 54-56

स्त्री–शोषण की व्यथा–कथाः गुलकी बन्नो

डॉ. सुनीता मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
सभी जानते हैं कि स्त्री–पुरूष समाज रूपी सिक्के के दो पहलू हैं और ये एक दूसरे के पूरक है। किसी एक का अभाव में दूसरे के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। उसके बाद भी पुरुषों ने समाज में महिलाओं को अपने बराबर का दर्जा नहीं दिया अर्थात समानता से वंचित रखा। यह स्थिति समाज में बहुत पहले से ही देखने को मिलती है। आदिकाल से ही नारियों की दशा दयनीय एवं सोचनीय रही है। उसकी दशा एक वस्तु की तरह रही है,जब चाहा इस्तेमाल किया और जब चाहा निकाल बाहर किया या शोषण की चक्की में पीस डाला। स्त्रियों की इसी दशा को देखकर विवेकानंद कहते है – ष्स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।ष इस तरह विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंचित हो, देश एवं समाज की भलाई को महिला समाज की तरक्की के बगैर असंभव बताया है।
श्गुलकी बन्नोंश कहानी स्त्री–शोषण की इसी व्यथा–कथा की सच्चाई को व्यक्त करती है । इसकी मूल संवेदना स्त्री शोषण से गुजरती हुई स्त्री मुक्ति से होकर पुनः उसकी विवशता भरी नारकीय जिंदगी की ओर लौट जाती है क्योंकि इस समाज में पुरुषों से अधिक स्त्री ही हमस्त्री का शोषण कर उसे उसकी जिंदगी से समझौता करने पर विवश करती हैं । श्गुलकी बन्नोश कहानी श्बन्द गली का आखिरी मकानश की प्रथम कहानी है। इसमें लेखक ने परित्यक्त स्त्री का उपेक्षा भरा जीवन जीने के लिए विवश गुलकी का मायके लौट आने व रिश्तेदारों एवं समाज में मिली हिकारत को सहने और घेघा बुआ तथा निरमल की माँ जैसी स्वार्थी लालची स्त्रियों द्वारा सताए जाने, उसकी बेसहारा और निराश्रित स्थिति को देखकर उसे सशक्त बनाने के लिए सत्ती द्वारा अपने घर में आश्रय देने और फिर लालची घेघा बुआ व निरमल की माँ के षड्यंत्र का शिकार बन पति के बुलाने पर उससे भी बदतर जिंदगी बिताने के लिए वापस पति के साथ चले जाने का चित्रण किया गया है। लेखक ने इस कहानी में श्गुलकीश के माध्यम से परित्यक्त स्त्री के जीवन को चित्रित किया है।
गुलकी अपने पिता की अकेली सन्तान है और बाद में पिता की मृत्यु भी हो जाती है। वह संघर्षमय जीवन बिताती है। अपने पति के साथ पांच वर्ष रहने के बाद, पति उसका परित्याग कर देता है। क्योंकि वह एक मृत्य शिशु को जन्म देती है। गुलकी पति द्वारा प्रताड़ित होती है। उसका पति उसे सीढ़ी पर से धकेल देता है, जिसके कारण वह जिन्दगी भर के लिए कुबड़ी हो जाती है और पति का घर भी छोड़ना पड़ता है। अंत में असहाय लाचार होकर गुलकी वापस पति के साथ अत्यंत नारकीय जीवन जीने का समझौता कर लौटती है ।
लेखक ने कहानी में परित्यक्त स्त्री के साथ कटु व छलपूर्ण व्यवहार करनेवाले लोगों का चित्रण भी किया है। समाज में लोग अकेली स्त्री को घृणा की दृष्टि से तो देखते ही हैं, इसके साथ ही उसकी संपति हथिया कर उसका अपमान भी करते हैं। अकेली स्त्री की आजीविका कमाने में मदद करने की आड़ में जो कुछ उसका है उसे लेने का प्रपंच रचते हैं। ड्राइवर बाबू, निरमल की माँ तथा घेघा बुआ के माध्यम से लेखक ने ऐसे ही कपटी व्यक्तियों का चित्रण किया है, जो सहायता करनेवाले व्यक्ति का मुखौटा लगाकर लोगों की संपति हथियाने के इरादे रखते हैं। घेघा बुआ ऐसी ही स्त्री है जो पहले तो गुलकी को शरण देती है पैसे के लालच में। परन्तु जब गुलकी की दुकान नहीं चल पाती और वह बुआ को किराया नहीं दे पायी । तब घेघा बुआ उसे चौतरे से निकाल देती है। वह उसका अपमान करती है और उसकी दुकान को भी बर्बाद कर देती है।
लेखक ने इस कहानी के माध्यम से कुबडे व्यक्ति का समाज द्वारा मज़ाक उड़ाने का चित्रण भी किया है। गुलकी जब वापिस अपने मायके आती है तो मुहल्ले के बच्चे उसे बहुत तंग करते हैं। वे गुलकी को कभी कुबड दिखाने के लिए कहते है तो कभी उसे चिढ़ाते हुए कहते – "कुबड़ी – कुबड़ी का हेराना"। एक बार तो मेवा ने उसकी पीठ पर धूल फेंकी और सब बच्चों ने मिलकर उसे बुरी तरह पीटा भी। इस दयनीय स्थिति के बीच भी वह यही समझती है– ष्हमारा भाग ही खोटा हैष। 2 वह चुपचाप सबकी बातें सुनती और अपने भाग्य को कोसती ।
लेखक ने कहानी में सत्ती के माध्यम से एक सशक्त स्त्री का चित्रण किया है जो निस्वार्थ भाव से औरों की मदद करती है। पति व समाज द्वारा दुत्कारे जाने के पश्चात सत्ती गुलकी को अपने घर में पनाह देती है और उसे अन्याय के खिलाफ लड़ने को भी कहती है। उसे बुरे लोगों का साथ न देकर उनके विपक्ष में खड़े होने के लिए समझाती है । अन्त में जब उसका पति उसे दोबारा लेने आता है तो वह उसे जूते लगाने को कहती परन्तु गुलकी उसकी यह बात नहीं मानती है और पति के साथ जाने को कहती है। गुलकी सत्ती से कहती है कि "अपनी सगी बहन क्या करेगी जो सत्ती ने किया हमारे लिए।" [3]
लेखक ने गुलकी के साध्यम से एक ऐसी पारंपरिक सोच वाली स्त्री का चित्रण किया है जो शारीरिक व आर्थिक रूप से असमर्थ होने के कारण अन्याय को अपना भाग्य समझ कर अपनाती है और पति द्वारा प्रताड़ित होने के उपरान्त भी पति को नहीं छोड़ना चाहती है चाहे पति जीवन भर उसे कष्ट क्यों न दे।

मूल शब्दः गुलकी का जीवन संघर्ष, सरल–सहज स्वभाव, आत्मनिर्भर, विवश,कमजोर,अकेली,परित्यक्ता, ममतामयी, संवेदनशील, उदारदिल या सहृदय,अकेली व निस्सहाय।

प्रस्तावना
नई कहानी के दौर में धर्मवीर भारती द्वारा 'गुल की बन्नो' कहानी लिखी गई। यह नारी मुक्ति और सशक्तिकरण का दौर था । इस समय में न केवल नारी लेखन अपितु पुरुष लेखन भी नारी जीवन के यथार्थ को पूरी जीवंतता के साथ प्रस्तुत कर रहा था । समाज में उसकी

स्थिति का चित्रण कर स्त्री समाज में चेतना लाने का प्रयास हो रहा था । श्गुल की बन्नोश ऐसी कहानी है जो एक ओर नारी जीवन की व्यथा कथा को उजागर करती है तो दूसरी ओर गुलकी जैसी पारंपरिक सोच से ग्रसित स्त्री को उससे उबारने का प्रयास करनेवाली सत्ती जैसी सशक्त नारी का भी चित्रण किया गया है साथ ही घेघा बुआ व निरमल की माँ जैसी स्वर्थी और लालची नारियों का चित्रण करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि जब तक नारी ही नारी का शोषण अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु करती रहेंगी तब तक स्त्री का समाज में, उसके जीवन में परिवर्तन सम्भव नहीं है। समाज में नारी के स्वतंत्र व स्वाभिमानी,सम्माननीय अस्तित्व कायम करने हेतु आवश्यकता है सत्ती जैसी सुदृण सशक्त नारियों की, तभी पुरुष समाज भी शोषण करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा और समानता से परिपूर्ण स्वस्थ मानव समाज की स्थापना हो पाएगी।

'गुल की बन्नो' कहानी में गुलकी एक ऐसा नारी पात्र है जो सीधी–सादी, सर्वगुण संपन्न, सच्चरित्र होकर भी शोषण का शिकार बनती है। उसका शोषण पारिवारिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर किया जाता है। एक और वह पति द्वारा परित्यक्ता है तो दूसरी ओर गांव के लोग उसका जीना हराम कर देते हैं।

गरीब पिता की बेटी गुलकी जब ब्याह कर अपने ससुराल जाती है तब पति उसका सम्मान नहीं करता उसे पत्नी नहीं अपितु नौकरानी समझता है, मारता– पीटता है, यहां तक कि गर्भवती होने पर भी उसके साथ दुर्व्यवहार करता है। उसे सीढ़ियों से धकेल देता है जिसके कारण वह न केवल अपनी संतान को खो देती है अपितु शारीरिक रूप से भी घायल हो जाती है।उसे ऐसा घाव हो जाता है कि उसकी पीठ पर कूबड निकल जाता है जिसमें वक्त–बेवक्त असहनीय पीड़ा होती है। गुलकी को इतना सताने के बाद भी जब पति का मन नहीं भरता तो वह गुलकी के सिर पर उसकी सौत लाकर बिठा देता है और गुलकी का परित्याग कर देता है। परित्यक्ता होने पर गुलकी अपने पिता के घर वापस लौट आती है। दुर्भाग्यवश गुलकी के विवाह के उपरांत उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। गुलकी के सिर से माता–पिता का साया उठ चुका था और वह अपने मायके के टूटे–फूटे मकान में अकेली रहने लगती है। उस की दयनीय दशा पर तरस खाकर पंचायत के बीच उसी गांव की घेघा बुआ अपने खाली चौतरे का इस्तेमाल करके पैसा कमाने की नीयत से गुलकी को वहां सब्जियां बेचने के की इजाजत दे देती है, लेकिन चतुर– कपटी घेघा बुआ अपने फायदे के लिए गुलकी का उपयोग करने लगती है।

सीधी–सादी, अनाथ, असहाय, परित्यक्ता गुलकी को जीवन निर्वाह का एक साधन तो मिल गया किंतु उसे यह पता नहीं था कि इसका उसे कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। गुलकी अपनी सब्जियों की दुकान घेघा बुआ के चौतरे पर लगाने लगी। वहीं पर बच्चों की मंडली खेलती थी,उनके खेल में बाधा पड़ने लगी। सब बच्चों ने गुलकी को परेशान करना शुरू कर दिया। रोज एक युद्ध बच्चों के साथ गुलकी को लड़ना पड़ता था। मिरवा और मटकी जैसे अछूत, अनाथ, बीमार बच्चों पर अपनी ममता लुटाने वाली गुलकी की कद्र बच्चे नहीं करते थे। मिरवा और मटकी भी बचपने के कारण उसकी ममता को ना समझ सके और उन्हीं बच्चों की टोली में शामिल हो गए जो गुलकी के लिए मुसीबत बन चुके थे। गांव वाले, खासकर घेघा बुआ बच्चों की गलती पर भी गुलकी को ही डांटती थी। बच्चे उसके कूबड का मजाक बनाकर उसपर मारते–पीटते, पीड़ा पहुंचाते, इतना ही नहीं कूबड पर मिट्टी भी फेंकते और उसकी सारी तरकारी का सत्यानाश कर देते थे। लेकिन गुलकी से सांत्वना दिखाने, बच्चों को डांटने या सजा देने की बजाय घेघा बुआ गुलकी पर ही बरस पड़ती थी। इस खेल में बच्चे उसी के जैसे अनाथ, असहाय मिरवा और मटकी का सहारा लेते थे और मारपीट करते थे। एक बार मटकी को इतनी चोट लगती है कि मुंह से खून बहने लगता है, गुलकी की ममता उसकी ऐसी हालत देखकर तड़प उठती है और मटकी द्वारा परेशान किए जाने के बावजूद भी वह अपने पल्लू से उसका बहता खून पोंछती है और दूसरे शरारती बच्चों को भला–बुरा कहती है, डाटती है। घेघा हुआ जैसी स्वार्थी औरत गुलकी के अंदर बैठी मां को भी नहीं पहचाना चाहती है और गुलकी को बच्चे के मुंह लगने, डांटने–फटकारने के लिए भला–बुरा कहती है। गुलकी चुपचाप सब कुछ सहन करती है क्योंकि उसकी विवशता, अकेलापन उसे चुप रहने पर मजबूर करता है, ऊपर से घेघा बुआ के चौतरे पर लगी दुकान, जिसका किराया भी कुछ महीनों से गुलकी अदा नहीं कर पाती है, इस एहसान तले दबकर गुलकी की जुबान खामोश हो जाती है।

यह सत्य है कि हमारे भारतीय समाज में नारी ही नारी का शोषण करती है। इस कहानी की घेघा बुआ, निरमल की मां जैसी औरतें इसका प्रमाण है। घेघा बुआ अपनी उदारता का प्रदर्शन करके वाह–वाही लूटने वाली अत्यंत स्वार्थी व चतुर महिला है। गांव वालों से प्रशंसा पाने के लिए अपनी उदारता का परिचय देते हुए घेघा बुआ किराए पर अपना चौतरा गुलकी के जीवन निर्वाह हेतु सब्जी की दुकान लगाने के लिए दे तो देती है किंतु इसी की आड़ में वह अपने स्वार्थ की रोटियां सेकने में जरा भी नहीं चूकती। गुलकी अति वर्षा व बीमारी के कारण जब कई दिनों तक दुकान नहीं लगा पाती और उसकी आमदनी नहीं हो पाती तब घेघा बुआ के किराए के पैसे वह नहीं दे पाती है। इस बात से चिढी हुई घेघा बुआ गुलकी को सताने में बिल्कुल भी संकोच नहीं करती है। वह कचरे के कारण रुका नाली का गंदा पानी वहीं फेकती है जहां गुलकी की दुकान थी उसकी सब्जियां गंदे पानी में बह जाती हैं। गुलकी के क्रोध करने पर बुआ कहती है –"पांच महीने से किराया नाही दियो और हियाँ दुनिया भर के अंधे–कोढ़ी बटुरे रहत हैं। चलौ उठाओ अपनी दुकान हियां से "। [4] गुलकी पहले उसे मना करती है बाद में चीख– चीख कर रोती है और भगवान को कोसती है। गुलकी का सारा क्रोध करुणा के आंसू बनकर उसकी आंखों से बह निकलते हैं और उसका विरोध,उसकी चीख–पुकार तथा ईश्वर को भला–बुरा कहने में दिखाई देता है, क्योंकि घेघा बुआ की पोल इसी क्रोध के कारण एक प्रवाह में खुल जाती है कि किराया न दिए जाने के ताने मारने का अधिकार बुआ को नहीं है क्योंकि बुआ ने गुलकी के मकान के दरवाजे, खिड़की की लकड़ियाँ गुलकी से बिना पूछे काटकर बेच दी थीं ।

गुलकी उस दिन के बाद से बुआ के चौतरे पर कभी नहीं गई।उसने बुआ को यह जता दिया कि वह अनाथ व असहाय जरूर है किंतु इतनी कमजोर नहीं है कि उसके स्वाभिमान पर लगी चोट को बर्दाश्त कर सके। अपने ऊपर किए गए शोषण को वह एक सीमा तक सह सकती है क्योंकि वह मजबूर है, विवश है, किंतु शोषण करनेवाले द्वारा उठाए गए फायदे से अनभिज्ञ नहीं है, वक्त आने पर गुलकी ने बुआ को जता दिया कि बुआ ने गुलकी पर कोई एहसान नहीं किया है।

अनाथ गुलकी का जर्जर मकान बिना खिड़की, दरवाजों के असुरक्षित था। इसलिए गुलकी कभी निरमल की मां के यहां तो कभी सत्ती के यहां रात में जाकर सोती थी। जैसे–तैसे दिन काट रही थी, कि अचानक एक दिन उसका टूटा–फुटा मकान जोरदार बारिश की बलि चढ़ जाता है। धमाकेदार आवाज के साथ गुलकी का मकान ढह जाता है और मिट्टी में मिल जाता है। गुलकी मकान गिरने पर फूट–फूटकर रोती है। उस लाचार गुलकी को सत्ती अपने यहां शरण देती है। सत्ती भी अकेली है, लेकिन गुलकी की तरह कमजोर नहीं है, अनपढ़ है, अनाथ है, लेकिन विवश नहीं है। वह साबुन बेचकर सम्मान व इज्जत के साथ अपना जीवन निर्वाह करती है। वह गुलकी को भी सम्मान के साथ निडर होकर जीना सिखाने का प्रयास करती है। किंतु गुलकी के अंदर बैठी अनपढ़, असहाय, अबला औरत अपने–आप को सबला नहीं बना पाती है। यह उस समय महसूस होता है जब घेघा बुआ और निरमल की मां गुलकी की एकमात्र संपत्ति गिरा मकान हड़पने के उद्देश्य से उसके पति को चंद पैसों का लालच देकर, झूठी पट्टी पढ़ा कर, गुलकी को उसके मायके से ससुराल

ले जाने के लिए बुलाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि यदि गुलकी मायके में रहेगी तो वे उसका मकान नहीं हड़प सकेंगे, और वह उनके स्वार्थ तथा लालचीपन की पोल खोल देगी जिससे उनकी गांव में बदनामी होगी। इसी डर से वे गुलकी को गांव से भगाना चाहती थी। जब गुलकी का पति उसे लेने आता है तब बुआ पहले सत्ती को बुलाकर गुलकी को समझाने की बात कहती है, पर सत्ती बुआ पर क्रोधित हो जाती है और गुलकी को उसके पति के साथ भेजने को तैयार नहीं होती। तब बुआ चालाकी से गुलकी को बुलाती है उसके पति से मिलने के लिए, जब गुलकी पति से मिलने जाती है तब सत्ती गुलकी के साथ जाती है और गुलकी को समझाने का प्रयास करती है और गुलकी से कहती है कि उसे (गुलकी को) जीने के लिए पति रूपी लाठी के सहारे की आवश्यकता नहीं है, वह स्वाभिमान के साथ यदि जीना चाहती है तो उस नकारे पति का त्याग कर दे जिसने उसकी कदर नहीं की। वह गुलकी से कहती है कि गुलकी पति के मुंह पर तमाचा मारकर, उसका अपमान करके गांव से भगा दे और यह बता दे कि गुलकी अकेले सम्मान के साथ जी सकती है, वह समर्थ है, उसे किसी पुरुष के सहारे की आवश्यकता नहीं है। किंतु गुलकी जब पति को देखती है तब उसके अंदर की औरत, पति की चिंता करने वाली पतिव्रता पत्नी जाग उठती है और उसे अपने पति के स्वास्थ्य की चिंता होने लगती है। वह मन ही मन सोचती है कि उसका पति उसके बिना कितना कमजोर हो गया है क्योंकि उसकी सौत उसे खाना ठीक से नहीं देती, वह पति की सेवा नहीं करती, इस तरह गुलकी के मन में दया भावना भर जाती है और वह सत्ती की बात ना मानकर बुआ की बात मानती है तथा पति को परमेश्वर मान अपने जीवन का उद्धार करना स्वीकार कर लेती है। सत्ती क्रोध में गुलकी को भला–बुरा कहकर वहां से चली जाती है। गुलकी मन ही मन जैसे संकल्प लेती है कि वह अब सारा जीवन पति सेवा में ही समर्पित कर देगी। पति के त्यागने के बाद में गुलकी को लगता है कि उसने अपने जीवन में अब तक जो कुछ सहा इसी कारण सहा कि उसे सहारा देने वाला, साये के रूप में उसका पति नहीं था। बेचारी अनपढ़ गुलकी चालाक, लालची, इंसानियत की दुश्मन बुआ और निरमल की मां की भावनाओं को नहीं समझ पाती, सत्ती को पहचान नहीं पाती, और अपने अधिकारों से अनभिज्ञ गुलकी अपने पैरों पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मार लेती है, वह पत्नी से नौकरानी बनने को तैयार हो जाती है।

दूसरी ओर औरत होकर औरत की दुश्मन बनी बैठी बुआ और निरमल की मां बेईमानी से गुलकी के पति से गुलकी का मकान अपने नाम करवा लेती है, निरमल की मां मकान अपने नाम करवाकर कमीशन के कुछ पैसे बुआ को और गुलकी के पति को दे देती है। इन सब से अनभिज्ञ गुलकी अपने भविष्य के सपने बुनती मायके से विदा होने के लिए तैयार हो जाती है। यह दोनों (बुआ और निरमल की मां) इंसानियत की दुश्मन अपना स्वार्थ पूरा होते ही गुलकी को एक बोझ की तरह मायके से विदा करने लगती हैं। इसी बीच ममता की देवी मुन्ना की मां इन दोनों को धिक्कारते हुए गुलकी को एक बेटी की तरह विदा करती है और बेटी की विदाई की सारी रस्में पूरी करती हुई बेटी गुलकी को ससुराल के लिए विदा करती है। मायके से जाते हुए गुलकी के अंदर बैठी मां अनाथ मिरवा और मटकी के लिए तड़प उठती है। वह उन दोनों बच्चों को अपनी गांठ से एक पैसे निकाल कर देती है और उनसे विदा लेती है। यह दोनों अनाथ उसकी विदाई पर विदाई–गीत गाते हैं, क्योंकि उनकी नादान बुद्धि यही समझती है कि उन्हें पैसे गीत गाने के लिए गुलकी ने दिए हैं। वे दोनों भी गुलकी की ममता को नहीं समझ पाते हैं। इस तरह गुलकी पति के साथ ससुराल एक नौकरानी बनने के लिए विदा हो जाती है क्योंकि पति उसे पत्नी का दर्जा देने के लिए नहीं ले जाता है अपितु उसे एक नौकरानी की आवश्यकता थी,उसकी दूसरी औरत, जो अब मां बन चुकी थी, की देखभाल करे, तथा घर का काम कर सके और गुलकी तो बिन पैसे के काम करनेवाली नौकरानी थी। दूसरी ओर गुलकी भी एक सहारा चाहती थी, पति का सहारा क्योंकि उसे लगता है कि बिना पति के स्त्री समाज में असुरक्षित है और सम्मान से जी नहीं सकती है।

इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि हमारे भारतीय समाज में पुरुष ही नहीं अपितु नारी ही नारी की दुश्मन है स्वार्थ और लालच इंसान को इतना नीचे गिरा देता है कि इंसान को दूसरों की पीड़ा समझ में नहीं आती है। आंखों पर स्वार्थ की पट्टी बांधने वाला इंसान केवल और केवल अपने सुख की सोचता है,उसके बाहर न तो बहुत कुछ देखना चाहता है और ना ही सोचना चाहता है। जैसा कि गुलकी का पति,निरमल की मां और घेघा बुआ करती हैं। इतना ही नहीं स्वार्थी नारी सम्मान से अकेले जीवन व्यतीत करने वाली नारी को अपमानित करने और चोट पहुंचाने से भी नहीं चूकती। घेघा बुआ सत्ती पर भी लांछन लगाने से नहीं चूकती है क्योंकि सत्ती बुआ के झांसे में नहीं आती और स्वाभिमान से अपना जीवन जीती है ।

'गुल की बन्नो' कहानी में गुलकी सभी उपेक्षित पात्रों का प्रतिनिधित्व करती है । उसकी बेबसी की कहानी केवल उसकी अपनी कहानी नहीं है बल्कि उसके जैसी आनेक नारियों की कहानी है जो पति और समाज से तिरस्कृत हैं ।

इस कहानी से यह भी प्रमाणित होता है कि नारी ही नारी को समाज में सम्मान से जीने देना नहीं चाहती और वक्त–बेवक्त, मौके–बेमौके इस बात का एहसास दिलाती रहती है कि नारी पुरुष रूपी बैसाखी, अर्थात पति के बिना अधूरी है वह अकेले जीवन नहीं व्यतीत कर सकती है,पति ही उसका परमेश्वर है, उसकी कृपा से ही उसकी जीवन नैया पार लग सकती है और वह समाज में सम्मान से जीने की अधिकारी बन सकती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि नारी जीवन को सुधारना है, समाज में सम्मान से जीने का अधिकारी बनाना है, तो सबसे पहले आवश्यकता है नारी और नारी के बीच की दूरी को, नफरत को दूर करने की, समाप्त करने की और इसके लिए आवश्यकता है स्वार्थ और लालच की चश्मे को उतार फेंकने की, अपने अधिकारों के प्रति जागृत होने की और अबला से सबला बनने व समझने की। नारी न तो भगवान बने और ना ही शैतान अपितु साधारण इंसान बनकर जीने की चेष्टा करें तो वह अपने जीवन को सार्थक बना सकती है। यदि स्वार्थ की प्रवृत्ति से दूर नहीं हटे और ना ही अपने आप को सुदृढ व सबल बनाया तो न जाने कितनी गुलकी समाज की बलिवेदी पर अपने जीवन बलि चढ़ाती रहेंगी और घेघा बुआ तथा निरमल की मां जैसी लालची स्वार्थी नारियां समाज की इस बलिवेदी की यज्ञाहुति में गुलकी जैसी नारियों की आहुति देती रहेगी ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. ijassonline-in@HTMI–
2. एक दुनिया समानांतर
3. वही
4. hindvivyakaran-com
5. ssinhacollege-co- in